प्रश्न-पेपर २७ ता. २५-१२-८५

'हैम संस्कृत प्रवेशिका प्रथमा' पाठ ३७ थी पूर्ण परिशीष्ट साथे मार्क्स १००

प्र. १ नीचेना प्रश्नोना सुस्पष्ट जवाब आपो । गमे ते ५ १५ मार्क्स

(१) ई तथा ऊ ना केटला रूपोमां शुं तफावत ते जणावी शतृ मां इत् ना प्रयोजन लखो दृष्टान्त साथे ।

(२) पाठ ५१ नियम ५ केटली रीते लागे ते जणावी आज्ञार्थ-विध्यर्थना स्वरादि एवा स्वरान्त प्रत्ययो केटला ते जणावो ।

(३) समासथी शुं फायदो ते जणावी अन् ना अ नो लोप केवा नामोमां थाय ते लखो

(४) पाठ ५८ नि. ७ केटली रीते लागे ते जणावी 'त्वमेतश्ग्रामं परिहरे: ' आ प्रयोग विध्यर्थ कृदन्त वापरी लखो ।

(५) पाठ - ५४ नियम - ५ शा माटे ते जणावी ते न होत तो शुं अनर्थ थात ते सदृष्टांत समजावो ।

(६) अन्वादेश तथा वाक्यनी व्याख्या लखी आ बुक कइ सालमां बनावी ते लखो

प्र. २ नीचेना माटे धातुओ अगर शब्दो पूर्णमाहिति साथे लखो । गमे ते १० १० मार्क्स

(१) एकठुं करेल (सञ्चित वि.) । (२) पूजवुं (पूज् विना)

(३) त्रण, त्रि विना (४) द्वारपाल

(५) शिक्षा (६) न गमतु

(७) अपमान (८) इलाज

(९) मुंझाइ जवुं (१०) गयेलु गत विना

(११) लेवु नी विना

प्र. ३ नीचेना रूपो ओळखावी, साधनिका करी अर्थ लखो, गमे ते-५ १२ मार्क्स

(१) पर्युन्मूल्यत - कर्म. आ. २पु. ब.व. (२) प्रोड्डीयताम्

(३) आर्पय (४) षण्णाम् (५) सर्पिष्षु

प्र. ४ (अ) नीचेनाना मांग्या प्रमाणे रूपो लखो, गमे ते-५ १० मार्क्स

(१) आयुष् ७-८ (२) हर्तृ. न. एक. ब.व.

(३) श्वश्रू ६ थी ८ (४) पटीयस् - पु. स्त्री. २-३-७-८

(५) मायिन् - त्रणे लिंग- संबोधन (६) पर्वन् - एक. ब.व.

(ब) नीचेनाना मांग्या प्रमाणे रूपो लखो । गमे ते - ५ १० मार्क्स

(१) उद् + हस् कर्मणी व. वि. १पु

(२) परि + उद् + ह्री - कर्तरि-कर्मणी आज्ञार्थ २-३ पु.

(३) उद् + ह्वे कर्मणी व. आ. १पु.

(४) उद् + निस् + रट् ५ काळ ३ पु. कर्तरि

(५) सम् + क्ष्मल - कर्मणी व. आ. एकवचन

प्र. 5 नीचेना समासोना विग्रहो लखी अर्थ लखो। गमे ते 5 (5 मार्क्स)

(1) नृस्यरे (2) मात्रधमाधमन:
(3) अल्पायुषौ (4) अनिषुणी
(5) वस्वत्ययौषधी: (6) बह्वात्म

प्र. 6 (अ) नीचेना वाक्यो समान्थि लीटी करेला पदो समास साथे लखो। गमे ते 3 (2 मार्क्स)

(1) परीक्षा करती राजपुत्रीओ राज्यमाटे युद्ध करता आ देशना राजानी हती (कृदन्त)
(2) नामना मोहथी मुंझाता अने ज्यां त्यां धनने शोधतां एवा कलियुगना जीवोनुं कल्याण थाओ
(3) सम्यग्दर्शन ए सुंदर दीपक छे ज्यारे चारित्रनी शुद्धि ए तेनो प्रकाश छे दीपक द्वारा प्रकाशने प्राप्त करता एवा अमे अमारा जीवनने धन्य करीए छीए।
(4) चार मासे अमे प्रथमा पूर्ण करी तेथी आ गति वडे भणता एवा अमे 12 मासे द्वितीया ने कदाच भणीशुं

(ब) नीचेना वाक्य सान्धि मुकी, अन्वय लखी, अर्थ करो। गमे ते- 3 (2 मार्क्स)

(1) नृपनरोऽस्माभिर्व्याकरणाध्ययन अधुनैव पर्यैक्ष्यन्त
(2) राज्ञोध्रियमानकिङ्करानीक्षित्वास्माभीरक्षितम्
(3) तास्मिन्नब्धयम्बुन्यागच्छान्ते यादांस्युदरे मत्स्येन मुक्तानि
(4) शोभनर्तो उद्गच्छत्पुष्पाण्यद्य नैतेन नीतानि

96
4 अक्षर शुध्याद्विना
100

जवाब:- प्र. 2 (2) मान् 10 ग. प. (3) त्रितय वि. (4) क्षत्तृ पु.
(5) निग्रह पु. (6) प्रतिकूल न. (7) पराभव-पु. (8) प्रतिक्रिया - स्त्री.
(9) लुप् 4 ग. प. (10) वीत वि. (11) उद् + ह्र

प्र. 3 (1) नथी (2) न थाय (3) आ. 3 पु. ए.व. (आ + अर्प्)

प्र. 5 (1) मनुष्यनी तलवारना शत्रु (2) हे माताजीना अधममां अधम पुरुष
(4) नथी विद्यमान इषु जेने एवा ते बे (5) धनना नाशनी औषधीओने
(6) घणा आत्माओ वालुं स्थान

प्र. 6 (ब) (1) अस्माभि: अधुना एव व्याकरणाध्ययने नृपनर: (नृ प्र.ब.व.) पर्यैक्ष्यन्त
(2) राज्ञा अध्रियमानकिङ्करान् ईक्षित्वा अस्माभि: रक्षितम्
(3) तास्मिन् अब्धयम्बुनि आगच्छान्ते यादांसी मत्स्येन उदरे मुक्तानि
(4) शोभन ऋतौ उद्गच्छत्पुष्पाणि अद्य एतेन नृा नीतानि